नए और बढ़ते हुए मसीहियों के लिए बुनियादी बाइबल अध्ययन

चार्ल्स “चिक” शेवर, *लेखक*

जे. वेस्ली एबी और मिरीयम विलियम्स, संपादक

छात्र से परिचय

आप अब एक मसीही हैं। आपको एक मसीही के रूप में बढ़ना सीखना होगा। आप एक मसीही के रूप में आगे बढ़ने के विषय में आठ पाठों का अध्ययन करेंगे।

प्रत्येक पाठ का स्वयं अध्ययन करें। बाइबल पढ़ें। अपनी सर्वोच्च क्षमता से प्रश्नों के उत्तर दें। फिर, अपने शिक्षक या पास्टर से मिलें। वे आपकी सहायता करेंगे। वे उन प्रश्नों के उत्तर देंगे जिन्हें आप नहीं जानते। वे पाठ को समझने में आपकी सहायता करेंगे।

आपको प्रत्येक पाठ में बाइबल की एक स्मृति आयत मिलेगी। आपको उन आयतों को जानना चाहिए। उन्हें याद कर लें। ये आयतें मसीही के रूप में बढ़ने में आपकी सहायता करेंगी।

कई बार, आपको **इस तरह** से प्रिन्ट किए गए गहरे काले रंग के शब्द दिखाई देंगे। सम्भवतः आप उन शब्दों या परिच्छेदों से परिचित न हों। प्रत्येक पाठ के अंत में, आपको संक्षिप्त परिभाषाओं के साथ शब्द सूची मिलेगी।

परमेश्वर आपसे अत्याधिक प्रेम करता है। वह आपका परमेश्वर बनना चाहता है। वह चाहता है कि आप उसके बारे में सीखें। आप परमेश्वर से बातें कर सकते हैं। आप उससे आपकी सहायता करने की विनती कर सकते हैं। वह समझने में आपकी सहायता करेगा। वह सीखने में आपकी सहायता करेगा।

शिक्षक से परिचय

यह पुस्तक किसी नए मसीही को उस पुरुष या स्त्री के मन फिराव के समय, या जितना शीघ्र हो सके दे दें। उस व्यक्ति को प्रोत्साहित करें कि वह पुरुष या स्त्री इन पाठों को पढ़ सके और अपनी क्षमता के अनुसार प्रश्नों के सर्वोत्तम उत्तर दे सके। व्यक्ति को एक समय में केवल एक ही पाठ पर काम करने के लिए कहें। पाठ पर चर्चा करने के लिए हर सप्ताह छात्र से मिलने का समय निर्धारित करने का प्रयास करें।

यदि छात्र स्वतंत्र रूप से पाठ नहीं पढ़ सकता है, तो एक समय निर्धारित करें जिसमें आप मिलकर पाठों को पढ़ सकें और चर्चा कर सकें। यद्यपि एक समय में केवल एक ही पाठ का समय निर्धारित करना बेहतर रहता है, परन्तु प्रत्येक पाठ के साथ एक से अधिक सत्र लेने की आवश्यकता पड़ सकती है। बाइबल के वचनों को खोजने में छात्र की सहायता करें। प्रश्नों के उत्तर एक साथ देते हुए यह सुनिश्चित करें कि छात्र अगले पाठ में जाने से पहले सामग्री को समझ चुका है। (संभावित उत्तरों को परिशिष्ट में ढूँढा जा सकता है।)

पाठ 1
मसीही परमेश्वर के हैं

स्मृति आयत:

> यीशु ने कहा, "देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि तू मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं भीतर आऊँगा" (प्रकाशितवाक्य 3:20)।

नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न के लिए, बाइबल या नए नियम में बाइबल की आयतों के पाठ खोजें। "यूहन्ना 1:12" का अर्थ है यूहन्ना की पुस्तक, अध्याय 1, आयत 12. बाइबल की शुरुआत में दी गई पुस्तकों की सूची को ढूंढें। पुस्तक जहाँ से शुरू होती है उस पृष्ठ पर जाएं। बाइबल की आयतों को ढूंढें और उन्हें पढ़ें। फिर पाठों में दिए गए प्रत्येक वाक्य और प्रश्न को पढ़ें। उत्तरों को अपने शब्दों में लिखें। या, बाइबल के शब्दों का प्रयोग करें। (पुराने नियम की आयतों को आपके लिए प्रिन्ट किया गया है।)

1. यूहन्ना 1:12 को पढ़ें। मैंने यीशु को अपने **मन में** ग्रहण कर लिया है। मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर है। यीशु मेरा **उद्धारकर्ता** है। मैं एक **मसीही** हूँ। क्या इसका अर्थ यह है कि मैं परमेश्वर की संतान हूँ? (हाँ या नहीं)

2. यीशु उन सभी लोगों का मित्र है जो उसे ग्रहण करते हैं। यीशु **हमारे मनों में** आना चाहता है। वह आने का इंतजार कर रहा है। परन्तु, हमें उसे बुलाना चाहिए। प्रकाशितवाक्य 3:20 को पढ़ें और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें।

   क) **हमारे मनों में** कौन आना चाहता है?

   ख) यीशु की वाणी का उत्तर कौन दे सकता है?

   ग) यीशु मुझसे क्या करवाना चाहता है?

   घ) जब मैं अपने हृदय का द्वार खोलूंगा तो यीशु मसीह क्या करेगा?

   ङ) क्या आपने यीशु मसीह को **अपने मन में** आने के लिए कहा है? (हाँ या नहीं)

   च) क्या अब आप **मसीही** हैं? (हाँ या नहीं)

3. लूका 19:20 को पढ़ें। क्या यीशु मसीह खोए हुए लोगों को बचाने के लिए आया था? (हाँ या नहीं)

खोए हुओं का अर्थ हर उस व्यक्ति से है जो यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में नहीं जानता है।

4. रोमियों 3:23 को पढ़ें।

   क) लोग क्यों **खोए हुए** हैं?

   ख) क्या इसलिए कि उन्होंने पाप किया है? (हाँ या नहीं)

   ग) रोमियों 6:23 का क्या अर्थ है जब यह कहती है कि **पाप** "मजदूरी" है या यह हमें मृत्यु देता है?

   घ) क्या इसका अर्थ है कि **पाप पापियों** को परमेश्वर से अलग कर देता है? (हाँ या नहीं)

पापी मरने पर **नरक** में रहेंगे। परन्तु, यीशु मसीह **विश्वासियों** को **अनन्त जीवन** का वरदान देता है। **विश्वासी** मरने पर **स्वर्ग** में रहेंगे।

5. रोमियों 5:8 को पढ़ें। जब हम पापी ही थे तब हमारे लिए कौन मरा?

6. 1 यूहन्ना की पुस्तक को ढूँढे। यह नए नियम के अंत के निकट आती है। 1 यूहन्ना, यूहन्ना की पत्रियों में से एक है। यह यूहन्ना की पुस्तक के समान नहीं है। 1 यूहन्ना 1:9 को पढ़ें। यदि हम अपने **पापों** का अंगीकार कर लें तो परमेश्वर क्या करेगा?

अंगीकार का अर्थ **परमेश्वर** के सामने यह मान लेना है कि **हम पापी हैं।**

7. यशायाह 55:7 में लिखा है कि: "दुष्ट को अपना बुराई करना छोड़ देना चाहिए, और उन्हें अपने बुरे विचारों को छोड़ देना चाहिए।" इसमें यह भी लिखा है कि: "उन्हें हमारे परमेश्वर के पास आना चाहिए, क्योंकि वह उन्हें खुशी से क्षमा करेगा।" उन्हें अपने **पापों** का **पश्चाताप** करना चाहिए। नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें।

   क) दुष्टों को क्या करना छोड़ देना चाहिए?

ख) उन्हें अपने बुरे विचारों का क्या करना चाहिए?

ग) जब हम पश्चाताप करेंगे तो परमेश्वर क्या करेगा?

8. इफिसियों 2:8-9 को ढूंढें। इनमें से कौन सा उत्तर सही है? (क, ख, या ग) मेरे या हर व्यक्ति के **उद्धार** का मार्ग क्या है?

क. मुझे अत्याधिक कार्य करना चाहिए।

ख. मुझे स्वयं को **बचाने** का प्रयास करना चाहिए।

ग. मुझे अपने आप को **बचाने** के लिए यीशु मसीह में विश्वास करना चाहिए।

9. इफिसियों 2:10 को पढ़ें।

क) हमें **उद्धार** पाने के बाद क्या करना चाहिए?

ख) क्या भले कार्य हमें बचाते हैं? (हाँ या नहीं)

10. हम यीशु मसीह के द्वारा किसे जानना सीखते हैं। (यूहन्ना 14:6 और 14:9)।

11. 1 यूहन्ना 5:13 को पढ़ें। क्या **विश्वासी** जान सकते हैं कि अब उनके पास **अनन्त जीवन** है? (हाँ या नहीं)

12. यूहन्ना 6:47 को पढ़ें।

क) क्या यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले व्यक्ति के पास **अनन्त जीवन** है? (हाँ या नहीं)

ख) क्या इसका अर्थ यह है कि मैं सदा जीवित रहूँगा? (हाँ या नहीं)

ग) मरने के बाद मैं कहाँ रहूँगा?

13. क्या आप जानते हैं कि आप परमेश्वर की संतान हैं? यदि हाँ, तो क्या आप अपने शब्दों में बता सकते हैं कि आप यह कैसे जानते हैं?

यीशु ने आपको नया जीवन दिया है। आप परमेश्वर की संतान है। अब, आप एक मसीही के रूप में कैसे बढ़ सकते हैं? यहाँ बढ़ने के कुछ महत्वपूर्ण तरीके दिए गए हैं।

प्रतिदिन बाइबल पढ़ें। मत्ती 4:4 को पढ़ें। फिर, प्रतिदिन यूहन्ना की पुस्तक का एक अध्याय पढ़ें। इन पाठों में यूहन्ना की पुस्तक और बाइबल की अन्य पुस्तकों से प्रश्न दिए गए हैं। प्रत्येक पाठ के लिए स्मृति आयत पढ़ें। प्रत्येक आयत को याद करें।

प्रतिदिन प्रार्थना करें। परमेश्वर से बातें करें। ऐसे कोई विशेष शब्द नहीं हैं जो आपको कहने चाहिए। परमेश्वर से वैसे ही बात करें जैसे आप एक अच्छे मित्र से बात करते हैं।

जितना हो सके कलीसिया में जाएं। ऐसी कलीसिया में जाएं जिसमें बाइबल से प्रचार किया जाता है। ऐसी कलीसिया में जाएं जिसमें यीशु के बारे में प्रचार किया जाता है। आपको अन्य **मसीहियों** के साथ रहना चाहिए। वे यीशु के लिए जीने में आपकी सहायता करेंगे।

परमेश्वर की आज्ञा मानें। परमेश्वर से आपकी सहायता करने के लिए कहें। वह आपको बताएगा कि आपको क्या करना चाहिए। वह बाइबल के द्वारा आपसे बात करेगा। वह कलीसिया में आपसे बात करेगा। जब आप सोचते हैं कि क्या करूँ, तो अपने आप से पूछें, "यीशु क्या करता?" इस बात का उत्तर परमेश्वर की आज्ञा मानने में आपकी सहायता करेगा।

दूसरे लोगों को गवाही दें। किसी और को बताएं कि यीशु मसीह ने आपके लिए क्या किया है। दूसरे लोगों को **गवाही** दें कि अब आप एक **मसीही** हैं।

अब, आपको बेहतर तरीके से यह समझना चाहिए कि एक **मसीही** क्या होता है। यह आपके **मसीही** जीवन की सिर्फ शुरुआत है। अभी बहुत सा आनन्द आने वाला है!

शब्द सूची

1. **विश्वासी** *(संज्ञा):* जो लोग यीशु मसीह को अपना **उद्धारकर्ता** मानते हैं; जो लोग यीशु को **अपने हृदय में** ग्रहण करते हैं; वे सभी लोग जो **मसीही** हैं।

2. **मसीही** *(व्यक्तिवाचक संज्ञा):* एक ऐसा व्यक्ति जो पापों का पश्चाताप करता है और यीशु पर विश्वास करता है; एक ऐसा व्यक्ति जो यीशु मसीह के पीछे चलता है और उसकी आज्ञा का पालन करता है।

3. **अंगीकार करना** (*क्रिया):* परमेश्वर से कहें कि आप जानते हैं कि आप एक **पापी** हैं; अपने **पापों** के और अपने बुरे विचारों तथा कार्यों के विषय में परमेश्वर को बताएं।

4. **अनन्त जीवन** *(संज्ञासूचक वाक्यांश):* वह जीवन जो परमेश्वर देता है; परमेश्वर के साथ जीवन अब और उसके साथ **स्वर्ग** में युगानुयुग का जीवन।

5. **क्षमा करें** *(क्रिया):* किसी को उनके बुरे विचारों और कार्यों के लिए दण्ड न देना; (जब हम **पश्चाताप** करते हैं तो परमेश्वर हमारे **पापों** को **क्षमा** करता है और भूल जाता है।)

6. **स्वर्ग** *(संज्ञा):* मृत्यु के बाद **मसीहियों** का घर।

7. **नरक** *(संज्ञा):* वह स्थान जहाँ **पापियों** को मृत्यु के बाद दण्ड दिया जाता है।

8. **मेरे मन में, हमारे मनों में** *(पूर्वसर्गीय वाक्यांश):* व्यक्ति के भीतर; लोगों के मूल में; (हृदय में एक व्यक्ति का मन, इच्छा और इच्छाएं सम्मिलित होती हैं।)

9. **खोए हुए** *(विशेषण):* परमेश्वर तक जाने का मार्ग न ढूँढ़ पाने वाले; **अनन्त जीवन** की आशा से रहित; यीशु को **उद्धारकर्ता** के रूप में न जानने वाले।

10. **पश्चाताप करना** (क्रिया): परमेश्वर से **पापों** को **क्षमा** करने के लिए कहें; **पाप** से मन फिराएं और परमेश्वर की ओर फिरें।

11. **बचाना; बचाता है** *(क्रिया):* **पाप** से स्वतंत्र करना; (यीशु मसीह हमें हमारे **पापों** से **बचाता** है या शुद्ध करता है। इसलिए, वह हमें **नरक** में दण्डित होने से **बचाता** है।)

12. **उद्धारकर्ता** *(व्यक्तिवाचक संज्ञा):* यीशु मसीह; वह जन जो हमें **पाप** से **बचाता** है।

13. **पाप** *(क्रिया):* ***पाप*** (संज्ञा): बुरे कार्य करना और बुरे विचार सोचना; परमेश्वर की आज्ञा न मानना; बुरे विचार या कार्य।

14. **पापी** *(संज्ञा):* ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के नियमों का पालन नहीं करता; ऐसा व्यक्ति जो **पाप** करता है।

15. **गवाही** *(क्रिया):* लोगों को मसीह के बारे में बताएं; बताएं कि यीशु मसीह ने आपके लिए क्या किया है।

पाठ 2
मसीही परमेश्वर के साथ-साथ चलते हैं

स्मृति आयत:

> "तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परन्तु तुम परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हो, वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा" (1 कुरिन्थियों 10:13)।

नए मसीही कई मायनों में शिशुओं के समान होते हैं। शिशु पैदा होने के बाद बढ़ते हैं। मसीहियों को यीशु में नए विश्वासियों के रूप में बढ़ना चाहिए। मसीही जब परमेश्वर पर भरोसा करते हैं तो बढ़ते हैं। मसीही जब परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं तो बढ़ते हैं। हम अपनी बढ़ोतरी को "परमेश्वर के साथ चलना" कहते हैं। मीका ने कहा, "अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चल?" (मीका 6:8)। मीका पुराने नियम का एक भविष्यद्वक्ता था।

निम्नलिखित आयतों को ढूंढें और पढ़ें। फिर प्रश्नों का उत्तर अपने शब्दों में दें। या, बाइबल की आयतों के शब्दों का प्रयोग करें।

1. यूहन्ना की पुस्तक हमें बताती है कि हमें परमेश्वर के साथ कैसे चलना चाहिए।

   क. यूहन्ना 8:12 को पढ़ें। क्या मसीही अंधकार में जीते हैं या चलते हैं? (हाँ या नहीं)

   ख. क्या परमेश्वर चाहता है कि हम जीवन देने वाली ज्योति में चलें? (हाँ या नहीं)

   ग. यूहन्ना 1:37 को पढ़ें। मसीहियों को किसके पीछे चलना चाहिए?

   घ. यूहन्ना 2:5 पढ़ें। क्या मसीहियों को वह सब करना चाहिए जो यीशु उन्हें करने के लिए कहता है? (हाँ या नहीं)

   ङ यूहन्ना 5:14 को पढ़ें। क्या मसीहियों को परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता करना बंद कर देना चाहिए?

2. 1 पतरस 5:8 को पढ़ें। कौन नहीं चाहता कि हम परमेश्वर के साथ चलें?

3. मत्ती 4:1 को पढ़ें। **शैतान** ने यीशु मसीह के साथ क्या किया?

4. इब्रानियों 4:14-15 को पढ़ें। बाइबल बताती है कि यीशु की **परीक्षा** हुई थी। क्या यीशु ने **परीक्षा** के आगे **हार** मान ली? (हाँ या नहीं)

> **परीक्षा** और पाप एक ही चीज नहीं हैं। **परीक्षा** का अर्थ गलत काम करने के लिए प्रेरित होना या आमंत्रित किया जाना है। पाप करने का अर्थ गलत काम करना है। क्या **परीक्षा** पाप है? (हाँ या नहीं)

5. जब **शैतान** हमारी **परीक्षा** करता है तो हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। हम परमेश्वर की सहायता से **शैतान** से लड़ते हैं। याकूब 4:7 को पढ़ें। जब **शैतान** आपकी **परीक्षा** करे तो आपको क्या करना चाहिए?

6. याकूब 4:17 और 1 यूहन्ना 3:4 को पढ़ें। पाप क्या है?

7. यशायाह 59:2 में लिखा है कि, "तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है" क्या मेरा पाप मुझे परमेश्वर से अलग करता है? (हाँ या नहीं)

8. 1 यूहन्ना 3:9 को पढ़ें।

   क. बाइबल की यह आयत आपके लिए क्या महत्व रखती है?

   ख. क्या परमेश्वर की संतान को पाप करते रहना चाहिए?

9. 1 कुरिन्थियों 10:13 को पढ़ें। परमेश्वर ने हमसे क्या प्रतिज्ञा की है? (क या ख)

   क. परमेश्वर **परीक्षा** से बच निकलने में मेरी सहायता करेगा। वह मेरी सहायता करेगा कि मैं **परीक्षा** में के आगे **हार** न मानूँ।

   ख. परमेश्वर **परीक्षा** से बचने में मेरी सहायता नहीं करेगा। जब मेरी **परीक्षा** होगी तो वह मेरी सहायता नहीं करेगा।

10. 1 यूहन्ना 2:1 में लिखा है कि यह पुस्तक यूहन्ना ने लिखी है। यूहन्ना ने यह पुस्तक क्यों लिखी है?

11. फिर से 1 यूहन्ना 2:1 को पढ़ें। मसीहियों को पाप नहीं करना चाहिए। इस प्रश्न के लिए कौन सा उत्तर (क, ख, ग या घ) उत्तम है? यदि मसीही पाप करने का चुनाव करते हैं, तो उन्हें करना चाहिए:

    क. कहना चाहिए कि वे पाप के आगे असमर्थ हैं। उन्हें कहना चाहिए कि शैतान ने उनसे पाप करवा दिया।

    ख. ऐसा व्यवहार करना चाहिए कि मानो उन्होंने पाप किया ही नहीं।

    ग. यीशु के सामने पापों का अंगीकार करना चाहिए और पश्चाताप करना चाहिए। और फिर उन्हें परमेश्वर के लिए जीना चाहिए।

    घ. मसीही जीवन जीना बंद कर देना चाहिए। उन्हें महसूस करना चाहिए कि वे यीशु के लिए नहीं जी सकते।

12. 1 यूहन्ना 1:9 को पढ़ें। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम पाप करें। परन्तु, यदि हम पाप करें तो क्या वह हमें क्षमा करेगा? (हाँ या नहीं)

जब हम अपने पापों को मान लेते हैं और पश्चाताप करते हैं तो वह हमें क्षमा करता है।

13. यूहन्ना 14:21 को पढ़ें। जब हम यीशु की आज्ञा मानते हैं तो हम उसे क्या दिखाते हैं?

14. यूहन्ना 10:27-38 को पढ़ें। इस आयत में “भेड़ों” का अर्थ मसीहियों से है। अनन्त जीवन किसके पास है?

यीशु अच्छा चरवाहा है जो भेड़ों की देखभाल करता है। यीशु हर उस व्यक्ति को जानता है जो मसीही है। मसीहियों के लिए यीशु के पीछे चलना महत्वपूर्ण है? (हाँ या नहीं)

अब परमेश्वर के साथ चलें। **परीक्षा** के आगे **हार** न मानें। परमेश्वर की आज्ञा मानें। प्रतिदिन यीशु के पीछे चलें।

शब्द सूची

1. **शैतान** *(संज्ञा):* दुष्ट आत्मा जो लोगों की **परीक्षा** करता है कि वे गलत काम करें; सबसे शक्तिशाली बुरी आत्मा; (**शैतान** परमेश्वर के विरुद्ध लड़ता है।)

2. **भविष्यद्वक्ता** *(संज्ञा):* ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर की ओर से बोलता है; (एक **भविष्यद्वक्ता** लोगों को परमेश्वर की ओर से संदेश देता है।)

3. **खड़े होना** *(क्रिया):* **परीक्षा** के सामने हार न मानना; (इस आयत में **खड़े होने** का अर्थ प्रभु में दृढ़ होने से है। **खड़े होने** का अर्थ परमेश्वर के विरुद्ध पाप न करने से है।)

4. **परखना, परखे जाना** *(क्रिया):* किसी व्यक्ति को पाप करने या गलत काम करने के लिए उकसाना।

5. **परीक्षा, परीक्षाएं** *(संज्ञा):* वह हर चीज जो किसी को पाप करने या गलत काम करने के लिए आमंत्रित करती है या ले जाती है; **शैतान** द्वारा **परखे** जाने का कार्य; **शैतान** एक व्यक्ति से पाप करवाने का प्रयास करता है।

6. **भरोसा** *(क्रिया):* परमेश्वर पर पूरी तरह से भरोसा करो; उस पर विश्वास करो; उस पर पूरी तरह भरोसा करो।

7. **हार मानना** *(क्रिया):* हार मान जाना; पाप को "हाँ" कहना; वह करना जो आपको नहीं करना चाहिए।

पाठ 3
मसीही परमेश्वर से सीखते हैं

स्मृति आयत:

> "मैं ने तेरे वचन को अपने **हृदय में रख छोड़ा** है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ" (भजन संहिता 119:11)

पवित्र बाइबल **परमेश्वर का वचन** है। यह हमें हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना के विषय में बताती है। यह हमें संसार के लिए परमेश्वर की योजना के विषय में बताती है। परमेश्वर के सत्य को खोजने के लिए प्रतिदिन बाइबल पढ़ें। हमारे साथ की गई उसकी प्रतिज्ञाओं को जानने के लिए बाइबल पढ़ें।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दें। या, बाइबल की आयतों के शब्दों का प्रयोग करें।

1. यूहन्ना 17:17 को पढ़ें। क्या **परमेश्वर का वचन** सत्य है?

परमेश्वर का वचन हमारे लिए उसकी शिक्षा है।

2. 2 तीमुथियुस 3:16 को पढ़ें। हम यह कैसे जानते हैं कि **पवित्रशास्त्र** परमेश्वर का सत्य है?

सम्पूर्ण **पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है** या उससे प्रेरित है। इसका अर्थ है कि यह परमेश्वर की ओर से आया है। परमेश्वर ने बाइबल को लिखने वाले लोगों के विचारों का मार्गदर्शन किया था।

3. निम्नलिखित आयतों में से बताएं कि **परमेश्वर का वचन** या **पवित्रशास्त्र** हमारे लिए क्या करेगा।

   क. 2 तीमुथियुस 3:15 को पढ़ें। क्या **परमेश्वर का वचन** हमें उद्धार के लिए बुद्धिमान बनाएगा? (हाँ या नहीं)

   ख. यूहन्ना 15:3 को पढ़ें। क्या **परमेश्वर का वचन** हमारे मनों को शुद्ध करेगा? (हाँ या नहीं)

   ग. पढ़ें प्रेरितों के काम। क्या परमेश्वर का वचन हमें सामर्थ्य देगा? (हाँ या नहीं)

4. **परमेश्वर का वचन** मसीहियों के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण है। यूहन्ना अध्याय 8 ढूंढें। इसकी कई आयतें बताती कि हमें **परमेश्वर के वचन** के साथ क्या करना चाहिए।

   क. यूहन्ना 8:54-55 को पढ़ें। यीशु मसीह, पिता परमेश्वर को जानता था। यीशु ने परमेश्वर के वचन के साथ क्या किया?

   ख. यूहन्ना 8:37 को पढ़ें। कुछ लोग यीशु की शिक्षाओं को स्वीकार नहीं करते। उनके मन में उसके वचन के लिए कोई स्थान नहीं है। क्या इसका अर्थ है कि वे **परमेश्वर के वचन** को नहीं मानते? (हाँ या नहीं)।

   ग. यूहन्ना 8:47 को पढ़ें। विश्वासी परमेश्वर के हैं शैतान के नहीं। विश्वासी **परमेश्वर के वचन** के बारे में क्या करते हैं?

   घ. क्या विश्वासी परमेश्वर की कही हुई बातों को सुनते हैं? (हाँ या नहीं)

   ङ यूहन्ना 8:31 को पढ़ें। एक **शिष्य परमेश्वर के वचन** के साथ क्या करेगा?

   च. क्या शिष्य **परमेश्वर के वचन** का पालन करेंगे? (हाँ या नहीं)

   छ. यूहन्ना 8:51 को पढ़ें। हम अनन्त जीवन कैसे पा सकते हैं?

   ज. क्या **परमेश्वर के वचन** का पालन करना आवश्यक है? (हाँ या नहीं)

यीशु ने कहा कि उसने परमेश्वर, यानी अपने पिता की आज्ञा मानी। यीशु ने **परमेश्वर के वचन** का पालन किया। हमें अपने परमेश्वर पिता की आज्ञा माननी चाहिए।

5. यूहन्ना 14:23 को पढ़ें। जब मैं यीशु की शिक्षाओं का पालन करता हूँ तो मैं उसे क्या दिखाता हूँ?

6. यूहन्ना 20:31 को पढ़ें।

   क. क्या **परमेश्वर का** लिखित **वचन** हमें परमेश्वर के पुत्र यीशु के बारे में बताता है? (हाँ या नहीं)

ख. यीशु मसीह विश्वासी को क्या देता है?

7. इफिसियों 6:17 को पढ़ें। शैतान हमें हमारे मसीही जीवन में हराने का प्रयास करता है। वह हमें परखता है और हमसे पाप करवाने का प्रयास करता है।

क. हम शैतान को हराने के लिए किस चीज का उपयोग कर सकते हैं?

ख. आत्मा की तलवार क्या है?

8. मत्ती 4:4, 4:7, और 4:10 को पढ़ें।

क. यीशु ने शैतान को कैसे उत्तर दिया?

ख. यीशु ने पवित्रशास्त्र की आयतों का प्रयोग क्यों किया?

9. भजन संहिता 119:10-11 को पढ़ें।

क. बाइबल कैसे आपकी सहायता करेगी कि आप पाप न करें?

ख. हमें **परमेश्वर के वचन** को अपने मनों में क्यों रखना चाहिए?

10. **पवित्रशास्त्र** की किस सच्चाई ने आपकी सहायता की है?

11. क्या बाइबल ने एक मसीही के रूप में बढ़ने में आपकी सहायता की है? (हाँ या नहीं)

यदि आपका उत्तर "हाँ," तो क्या आप अपने शब्दों में वर्णन कर सकते हैं कि सत्य क्या है?

12. यीशु के **शिष्य** को प्रतिदिन बाइबल पढ़नी चाहिए और उसका अध्ययन करना चाहिए। क्या आप अपने शब्दों में बता सकते हैं, क्यों?

हमने अध्ययन कर लिया है कि कैसे एक मसीही परमेश्वर से सीखता है। **शिष्यों** के लिए बाइबल क्यों महत्वपूर्ण है। अगले पाठ में, हम एक अन्य महत्वपूर्ण तरीके को देखेंगे जिससे मसीही लोग बढ़ते हैं।

शब्द सूची

1. **शिष्य** *(संज्ञा):* एक विश्वासी; एक ऐसा व्यक्ति जो यीशु मसीह के पीछे चलता है; एक ऐसा व्यक्ति जो यीशु मसीह के बारे में और अधिक सीखना चाहता है; एक ऐसा व्यक्ति जो **परमेश्वर के वचन** का अध्ययन करना चाहता है।

2. **परमेश्वर-की-प्रेरणा से लिखा गया** *(विशेषण):* परमेश्वर की ओर से आया

3. परमेश्वर का वचन: (देखें परमेश्वर का वचन।)

4. **प्रेरित होना** *(विशेषण):* परमेश्वर की ओर से आया; उसकी ओर से प्रदान किए गए विचार; (परमेश्वर ने पवित्र लोगों को अपने वचन लिखने के लिए **प्रेरित किया**।)

5. **पवित्रशास्त्र** *(व्यक्तिवाचक संज्ञा):* बाइबल; परमेश्वर का वचन; (परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र को लिखने में पवित्र लोगों की सहायता की।)

6. **तेरे वचनों को हृदय में रख छोड़ा है** *(क्रियासूचक वाक्यांश):* परमेश्वर के वचनों पर विश्वास किया और उनका पालन किया; बाइबल में परमेश्वर ने जो कहा है उसे सीखा और समझा।

7. **परमेश्वर का वचन; परमेश्वर वचन** *(व्यक्तिवाचक संज्ञासूचक वाक्यांश):* पवित्र बाइबल; पवित्रशास्त्र; परमेश्वर की सच्चाई; परमेश्वर की लोगों से कही गई बातें।

पाठ 4
मसीही लोग परमेश्वर के साथ बात करते हैं

स्मृति आयत:

> यीशु ने कहा कि, “अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा; माँगो, तो पाओगे।” (यूहन्ना 16:24)।

मसीहियों को परमेश्वर से बात करनी चाहिए। वह स्वर्ग और पृथ्वी में किसी से भी अधिक सामर्थी है। हमें प्रतिदिन अपने सबसे अच्छे समयों के दौरान प्रार्थना करनी चाहिए। अधिकतर लोगों को भोर का समय उत्तम समय लगता है। हमें परमेश्वर से एक शांत स्थान में बात करनी चाहिए। कई भजनों को लिखने वाले दाऊद ने कहा है कि; “हे यहोवा, भोर को मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी, मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी बाट जोहूँगा।” (भजन 5:3)

प्रार्थना के बारे में बाइबल हमें और क्या बताती है? इसका उत्तर हम इस पाठ में जानेंगे। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिए। या, बाइबल की आयतों के शब्दों का प्रयोग करें।

1. मरकुस 1:35 को पढ़ें। यीशु ने कब प्रार्थना की?

2. लूका 18:1 को पढ़ें। यीशु ने इस विषय में क्या कहा है कि हमें कितनी बार प्रार्थना करनी चाहिए?

3. 1 थिस्सलुनीकियों 5:17-18 को पढ़ें। प्रार्थना करते समय हमें क्या करना चाहिए?

यीशु मसीह में किए गए कार्य के लिए हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।

4. “यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता, तो प्रभु मेरी न सुनता।” (भजन संहिता 66:18)

   क. कभी-कभी प्रार्थना का उत्तर क्यों नहीं मिलता?

   ख. क्या मुझे अपने मन में पाप रखना चाहिए? (हाँ या नहीं)

5. 1 यूहन्ना 5:14 को पढ़ें।

क. क्या यह आयत हमें बताती है कि हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए? (हाँ या नहीं)

ख. हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए?

हमें परमेश्वर से वे वस्तुएं माँगनी चाहिए जो **परमेश्वर की इच्छा** के अनुरूप हैं। यह सभी मसीहियों के लिए महत्वपूर्ण है।

6. हम यूहन्ना की पुस्तक में प्रार्थना के विषय में सीखते हैं।

क. स्मृति आयत यूहन्ना 16:24 को पढ़ें। मसीहियों के लिए क्या **सौभाग्य** की बात है?

ख. क्या मसीहियों के लिए यीशु के नाम में कुछ भी माँगना सम्भव है? (हाँ या नहीं)

हालाँकि, मसीहियों को हमेशा प्रार्थना करनी चाहिए कि **परमेश्वर की इच्छा** पूरी हो।

ग. यूहन्ना 14:13 को पढ़ें। यीशु हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। इससे किसकी **महिमा** होती है?

जो कुछ किया जाता है उसके लिए हम पिता परमेश्वर को **महिमा** देते हैं।

घ. यूहन्ना 15:7 को पढ़ें। हमें क्या करना चाहिए कि यीशु हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दे?

हमें हर समय यीशु में बने रहने का प्रयास करना चाहिए। परमेश्वर हमें उसके लिए जीने में सहायता करेगा।

7. मत्ती 21:22 को पढ़ें। प्रार्थना का उत्तर पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

इसका अर्थ है कि मुझे परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर देने के लिए मुझे उस पर विश्वास होना चाहिए।

8. इन आयतों को पढ़ें और सोचें कि आप किस प्रकार की चीजों के बारे में प्रार्थना कर सकते हैं।

- मत्ती 6:11
- मत्ती 9:38

- फिलिप्पियों 1:9
- 1 तीमुथियुस 2:2
- याकूब 1:5

9. मत्ती 26:41 को पढ़ें। जब मैं पाप करने के लिए लालायित होता हूँ तो मुझे क्या करना चाहिए

परमेश्वर हमारी सहायता करेगा कि हम पाप न करें। हम उससे हमारी सहायता करने के लिए कह सकते हैं।

10. यीशु हमसे कैसे प्रार्थना करवाना चाहता है? (क. ख. या ग) यीशु हमसे चाहता है कि:

    क. सही धार्मिक शब्दों का प्रयोग करें।

    ख. केवल बाइबल में लिखे हुए शब्दों को कहें।

    ग. उसे बताएं कि हम अपने मनों में कैसा महसूस करते हैं।

11. क्या आपके पास अपने प्रार्थना के समय के लिए योजना है? (हाँ या नहीं)

12. आप परमेश्वर के साथ बात करने के विषय में क्या कर सकते हैं? एक वाक्य में अपनी प्रार्थना की योजना बताएं।

प्रार्थना एक **सौभाग्य** है! आप परमेश्वर से बात कर सकते हैं। उसके पास हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने की सामर्थ्य है। परमेश्वर आपसे अत्याधिक प्रेम करता है। वह आपको प्रतिदिन **आशीष** देता है। वह आपको बहुत चीजों से **आशीषित** करता है। वह आपको बहुत से तरीकों से भी **आशीषित** करता है।

अब, आप परमेश्वर के लिए कुछ कर सकते हैं। आप क्या कर सकते हैं यह जानने के लिए अगले पाठ का अध्ययन करें।

शब्द सूची

1. **आशीषित करता है** *(क्रिया):* अच्छी चीजें प्रदान करता है; विशेष तरीके से सहायता करता है; आनंदित करता है।

2. **महिमा** *(संज्ञा):* स्तुति, आदर, और आराधना।

3. **सौभाग्य** *(क्रिया):* एक विशेष काम या कार्य; (प्रार्थना मसीहियों के **सौभाग्यों** में से एक है। हम परमेश्वर से वैसे बात कर सकते हैं जैसे हम करीबी मित्रों से बात करते हैं। हम परमेश्वर पिता से अपनी जरूरत की चीजों के लिए विनती कर सकते हैं। यही कारण है कि प्रार्थना मसीहियों के लिए एक विशेष कार्य या **सौभाग्य** है।)

4. **धार्मिक** *(विशेषण):* एक धर्म या कलीसिया की किसी बात का वर्णन करता है; (हम किसी धर्म या कलीसिया के बारे में बात करते समय **धार्मिक** शब्दों का प्रयोग करते हैं।)

5. **बना रहना** ***(क्रिया):*** ठहरे रहना; उसी स्थान पर ठहरे रहना; (इस आयत में, **बने रहने** का अर्थ यीशु में जीवन जीने से है। हम मसीह के साथ रहने और उसे न छोड़ने का निर्णय लेते हैं।)

6. **परमेश्वर की इच्छा** *(संज्ञासूचक वाक्यांश):* वह बात जो परमेश्वर लोगों के लिए चाहता है; (**परमेश्वर की इच्छा** को परमेश्वर की मर्जी भी कहा जाता है।)

पाठ 5
मसीही परमेश्वर के साथ साझा करते हैं

स्मृति आयत:

> "इसलिये तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।" (1 कुरिन्थियों 10:31)

क्या आप यह प्रार्थना कर सकते हैं?

> *हे परमेश्वर, मैं आप पर सचमुच विश्वास करता हूँ। मैं विश्वास करता कि आपने मुझे बचाया है। मैं आपके लिए उत्तम से उत्तम तरीके से जीने का प्रयास करूंगा। मैं आपको प्रसन्न करना चाहता हूँ। मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ। मेरे पास जो कुछ भी है उसे मैं आपके साथ **साझा** करना चाहता हूँ। मैं अपने आप को आपके साथ **साझा** करना चाहता हूँ। यीशु के नाम से माँगता हूँ। आमीन।*

प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीहियों को एक पत्री लिखी थी। उसने उनसे कहा कि वे सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करें। स्मृति आयत को फिर से पढ़ें। हम जो कुछ भी करते हैं उसमें हमें यह प्रश्न पूछना चाहिए; क्या इससे परमेश्वर की **महिमा** होती है?

1. मत्ती 22:36-40 को पढ़ें।

   क. मुझे परमेश्वर से कितना प्रेम करना चाहिए?

   ख. मुझे अपने पड़ोसी से कितना प्रेम करना चाहिए?

2. 1 यूहन्ना 5:2-3 को पढ़ें। मैं परमेश्वर के प्रति प्रेम कैसे दिखाऊँ? मैं दूसरों के प्रति प्रेम कैसे दिखाऊँ?

3. यूहन्ना हमें बताता है कि हमें परमेश्वर को भावता हुआ जीवन जीना चाहिए।

   क. यूहन्ना 12:24-25 को पढ़ें। गेहूँ के एक दाने को अनेक बीज उत्पन्न करने से पहले क्या करना होगा?

गेहूँ का दाना अपने नए बीजों में होकर जीवित रहता है। मुझे यीशु के लिए जीना चाहिए। परन्तु, मुझे **संसार के लिए** मर जाना चाहिए। **मुझे संसार से** मन फिराना चाहिए। **मुझे** पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए। यीशु मुझे जीवन देता है।

ख. मुझे यीशु के पीछे क्यों चलना चाहिए और उसकी सेवा क्यों करनी चाहिए? (यूहन्ना 12:25)

ग. मुझे **स्वार्थी** नहीं होना चाहिए। यीशु ने क्या कहा कि उसका पिता यीशु की सेवा करने वाले के लिए क्या करेगा? (यूहन्ना 12:26)

4. 2 कुरिन्थियों 5:17 को पढ़ें। मैं अब एक मसीही हूँ। हर व्यक्ति और वस्तु के प्रति अब मेरा **व्यवहार** नया हो चुका है। अब मैं किसके परिवार में हूँ?

मैं मसीह का हूँ। पुराना व्यक्ति मर चुका है। अब, यीशु में मैं एक नया व्यक्ति हूँ। मैं चीजों को नए तरीके से देखता हूँ। चीजों के विषय में मेरा **व्यवहार** नया है।

5. लूका 6:38 को पढ़ें। अब, मैं चीजों को छोड़ना चाहता हूँ। मैं अपने लिए क्या नहीं रखना चाहता?

6. **प्रेरित** पौलुस ने चीजों के प्रति हमारे **व्यवहार** के बारे में लिखा है। इफिसियों 4:28 को पढ़ें। फिर, नीचे दी गई सूची पढ़ें। तीन बातें चुनें जो चीजों के विषय में हमारे व्यवहार में होने चाहिए, (क, ख, ग, घ, ङ, या च)

क. अब और चोरी नहीं।

ख. अच्छे कर्मचारी बनें।

ग. सब कुछ अपने लिए रखें। **स्वार्थी** बन जाएं।

घ. निर्धन और जरूरतमंदों लोगों के साथ साझा करें।

ङ जब भी मौका मिले मैं चोरी कर सकता हूँ।

च. आलसी बनो। काम मत करो।

मैं लोगों को नई तरह से देखता हूँ। दूसरे लोगों के प्रति मेरा **व्यवहार** नया है।

7. जब मैं दूसरे लोगों के प्रति **दयालु** होता हूँ तो मैं उन्हें क्या दिखाता हूँ? (इफिसियों 4:32)

8. 2 कुरिन्थियों 6:14 को पढ़ें। मुझे किन लोगों के साथ नहीं मिलना चाहिए?

इसका अर्थ है कि मुझे उन्हें खुद को पाप की ओर ले जाने का अवसर नहीं देना चाहिए। मैं अपने जीवन को नए तरीके से देखता हूँ। अपने विषय में मेरा **व्यवहार** नया है।

9. 1 कुरिन्थियों 6:19 को पढ़ें।

   क) मेरे भीतर कौन वास करता है? इसलिए, मुझे अपने शरीर की देखभाल करनी चाहिए। मुझे अपने शरीर को नुकसान पहुँचाने के लिए कुछ नहीं करना चाहिए।

   ख) मुझे सावधानी से क्यों जीना चाहिए?

मुझे भलाई करने के लिए हर **अवसर** का प्रयोग करना चाहिए। (इफिसियों 5:15-16)

10. 1 यूहन्ना 2:10 को पढ़ें। मुझे किससे प्रेम करना चाहिए?

इसका अर्थ है कि मुझे सभी लोगों से प्रेम करना चाहिए। "मेरा भाई" में धरती का हर व्यक्ति सम्मिलित है।

11. परमेश्वर ने सभी लोगों को बनाया है। अब, यूहन्ना 2:15-16 को पढ़ें। मुझे किससे प्रेम नहीं करना चाहिए?

मुझे **संसार की** वस्तुओं से प्रेम नहीं करना चाहिए। मुझे **संसार** से दूर रहना चाहिए। मुझे हर बात से बढ़कर परमेश्वर से परमेश्वर करना चाहिए।

12. 1 कुरिन्थियों 6:20 को पढ़ें। परमेश्वर क्यों चाहता है कि हम उसकी **महिमा** और आदर करें?

हमें "मोल देकर खरीदा" गया है। "मोल देकर खरीदा" का अर्थ है कि यीशु हमें पाप से बचाने के लिए मरा। "मोल" यीशु की मृत्यु थी।

13. मत्ती 6:33 को पढ़ें।

क) हमें सबसे अधिक क्या देखना चाहिए या चाहना चाहिए?

ख) हमें और किस चीज की खोज या इच्छा रखनी चाहिए?

परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं का ध्यान रखेगा।

14. मरकुस 10:29-30 को पढ़ें। मसीहियों को यीशु के पीछे चलना चाहिए। आने वाले संसार में उन्हें क्या मिलेगा?

15. क्या आप एक वाक्य में बता सकते हैं कि आप परमेश्वर के साथ अपने जीवन को कैसे **साझा** करेंगे?

अब हम बेहतर तरीके से जानते है कि हमें अपने जीवनों को परमेश्वर के साथ कैसे **साझा** करना है। हम दूसरे लोगों के साथ भी अपने जीवनों को **साझा** कर सकते हैं। हमें दूसरों के प्रति कृपालु और **दयालु** होना चाहिए। इससे परमेश्वर की **महिमा** होगी। हमें प्रत्येक **अवसर** का उपयोग यीशु को **साझा** करने के लिए करना चाहिए। आगे, हम अध्ययन करेंगे कि यीशु को दूसरों के साथ कैसे **साझा** करें।

शब्द सूची

1. **प्रेरित** *(व्यक्तिवाचक संज्ञा):* शुरुआती मसीही कलीसिया का एक अगुवा; यीशु मसीह का विशेष शिष्य या अनुयायी।

2. **व्यवहार** *(संज्ञा):* किसी वस्तु या व्यक्ति के विषय में विचार, सोच, या भावना; (**व्यवहार** आमतौर पर हमारे कार्यों को नियंत्रित करता है।)

3. **दयालु** *(विशेषण):* दूसरे लोगों से प्रेम करना और उनकी आवश्यकताओं की चिंता करना; (उदाहरण के लिए, जब मसीही लोग भूखों को खिलाते हैं, तो वे **दयालु** होते हैं।)

4. **महिमा करना** *(क्रिया):* किसी की महिमा, स्तुति, या आदर करना।

5. **अवसर** *(संज्ञा):* कुछ करने का एक अवसर।

6. **धार्मिकता** *(संज्ञा):* पाप से शुद्ध होना; परमेश्वर के सामने पवित्र, धर्मी, और सही बनना।

7. **स्वार्थी** *(विशेषण):* अपने आपको खुश करने के लिए जीना; दूसरों के बारे में न सोच और केवल अपने बारे में सोचना।

8. **साझा करना** *(क्रिया):* जो मेरे पास है उसे दूसरों और परमेश्वर को देना।

9. **संसार** *(संज्ञा वाक्यांश):* वह हर चीज या वह हर व्यक्ति जो मुझे यीशु मसीह के पीछे चलने से रोकता है। (**संसार** में ऐसी बुरी आदतें शामिल हैं जो हमारे शरीरों को नुकसान पहुंचाती हैं। इसमें बुरे **व्यवहार** शामिल हैं जो हमें गलत तरीके से काम करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसमें वे लोग शामिल जो हमें पाप करने के लिए प्रेरित करते हैं। **संसार** में वह हर चीज शामिल हो जो परमेश्वर को भूलने में हमारी सहायता करती है।)

पाठ 6
मसीही परमेश्वर के लिए बोलते हैं

स्मृति आयत:

> "यीशु ने कहा, "मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।"
>
> (मत्ती 4:19)।

एक मनुष्य का एक मित्र था जो बहुत बीमार था। बाद में, उस मनुष्य ने अपने मित्र को देखा। उसका मित्र ठीक हो गया था। उसके मित्र ने कहा, "मुझे एक डॉक्टर मिल गया जिसने मुझे चंगा कर दिया।" उस मनुष्य ने अपने मित्र से पूछा, "उसका नाम क्या है?" उसके मित्र ने कहा, "मैं तुम्हें नहीं बताऊँगा।" वह मनुष्य दुखी होकर चला गया। वह उस बड़े डॉक्टर के पास जाना चाहता था।

यह सिर्फ एक कहानी है। परंतु यह कहानी हमें कुछ मसीहियों की याद दिलाती है। कई बार, मसीही दूसरों को यीशु के बारे में नहीं बताते। यीशु सब लोगों की सहायता कर सकता है। वह उन्हें उनके पापों से चंगा कर सकता है। मसीहियों को दूसरे लोगों को यीशु के बारे में बताना चाहिए। एक गवाह बताता है कि यीशु ने उस पुरुष या स्त्री के लिए क्या किया है।

1. लूका 8:39 को पढ़ें। यीशु मसीह ने एक दुष्ट आत्मा वाले व्यक्ति को चंगा किया। वह मनुष्य एक अच्छा गवाह था। वह पूरे नगर में गया। मनुष्य ने यीशु के बारे में क्या बताया?

2. यूहन्ना की पुस्तक हमें बताती है कि हमें कैसे गवाही देनी चाहिए। यूहन्ना 3:32 को पढ़ें। फिर, उत्तम उत्तर का चुनाव करें। (क, ख, या ग)। गवाही या साक्षी देने का अर्थ साझा करने से है:

   क) जो बातें आपने पुस्तकों से सीखी हैं।

   ख) जो बातें आपको किसी ने बताई हैं।

   ग) जो बातें आपने स्वयं देखी या सुनी हैं।

3. यूहन्ना 1:40-41 को पढ़ें।

   क) अन्द्रियास को अपना भाई मिला। उसके भाई का क्या नाम था?

ख) अन्द्रियास ने अपने भाई से कहा, "हमें **मसीह** मिल गया है।" कौन अपने भाई को यीशु तक लेकर गया?

अन्द्रियास एक गवाह था। वह मनुष्यों को पकड़ने वाला था।

4. यूहन्ना 6:28-29 को पढ़ें। क्या आप यीशु मसीह, यानी **मसीहा** पर विश्वास करते हैं? (हाँ या नहीं)

परमेश्वर हमसे यही करवाना चाहता है। यह परमेश्वर का कार्य है। (यूहन्ना 6:28-29)

5. यूहन्ना 15:16 को पढ़ें।

क) परमेश्वर मसीहियों से क्या पैदा या उत्पन्न करवाना चाहता है?

ख) हम **फल** कब **उत्पन्न** करते हैं?

जब हम **फल उत्पन्न** करते हैं तो हम **मनुष्यों को पकड़ने वाले** बन जाते हैं।

6. आप मनुष्यों को पकड़ने वाले बन सकते हैं और फल उत्पन्न कर सकते हैं।

क) आपके साथ हुई सबसे बड़ी बात क्या है?

ख) क्या आप एक शब्द में उत्तर लिख सकते हैं?

ग) क्या आपने इसके बारे में किसी को बताया है? (हाँ या नहीं)

घ) मसीही लोग दूसरों के प्रति अत्याधिक दयालु कैसे हो सकते हैं?

यह एक तरीका है जिससे मसीही **फल उत्पन्न** कर सकते हैं।

7. पढ़ें मत्ती 28:18-19. यीशु हमें किन लोगों में से शिष्य बनाने के लिए कहता है?

फिर, हमें उन्हें **बपतिस्मा** देना है। **बपतिस्मा** गवाही देने का एक तरीका है। **बपतिस्मा** दूसरे लोगों को दिखाता है कि हम मसीही हैं।

8. प्रेरितों के काम 8:12 और 8:35-38 को पढ़ें।

क) शुरुआती मसीहियों ने कब बपतिस्मा लिया था?

उन्होंने दिखाया कि वे यीशु, यानी **मसीहा** पर विश्वास करते हैं।

ख) क्या आपका बपतिस्मा हो चुका है? (हाँ या नहीं)

ग) यदि नहीं, तो क्या आप इसके बारे में सोच रहे हैं? (हाँ या नहीं)

9. स्मृति आयत को पढ़ें। (मत्ती 4:19)। यीशु ने क्या कहा कि वह हमें बनाएगा?

10. मुझे यीशु के लिए गवाही देने के लिए तैयार रहना चाहिए। (1 पतरस 3:15) मुझे हमसे क्या देने के लिए तैयार रहना चाहिए?

मुझे अपने विश्वास के बारे में प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए। मुझे परमेश्वर की गवाही देने के लिए तैयार रहना चाहिए।

11. प्रेरितों के काम 17:16-17 और 20:20 को पढ़ें। कौन सा प्रेरित लोगों से आराधनालय और बाजार में मिला करता था?

आज आपको भी हर स्थान पर गवाही देने के लिए तैयार रहना चाहिए।

12. यूहन्ना 14:6 को पढ़ें।

क) हमें यीशु मसीह की गवाही क्यों देनी चाहिए?

ख) यीशु अपने आप को क्या कहता है?

कोई भी व्यक्ति यीशु के बिना पिता तक नहीं पहुँच सकता। केवल यीशु ही वह मार्ग है जिससे आपको अनन्त जीवन मिल सकता है।

13. मैं यीशु मसीह के लिए गवाही दे सकता हूँ। जो व्यक्ति उसे नहीं जानता मुझे उससे क्या कहना चाहिए? नीचे कौन सी बात इसका उत्तर है? (क, ख, ग, घ, या ङ)

क. पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)

ख. सब ने पाप किया है। (रोमियों 3:23)

ग. यशायाह 53:6 में लिखा है कि: "हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" इसका अर्थ है कि यीशु हमारे स्थान पर हमारे पापों के लिए मरा।

घ. वे सब जो यीशु, यानी **मसीहा** पर विश्वास करते हैं परमेश्वर की संतान हैं। (यूहन्ना 1:12)।

ङ हमें ये सभी बातें बतानी चाहिए (क, ख, ग, घ, और ङ सभी बातों की जरूरत है)।

14. प्रेरितों के काम 14:21-22को पढ़ें।

क. हम नए मसीहियों की सहायता कैसे कर सकते हैं?

ख. क्या हम उनकी मजबूत मसीही बनने में सहायता कर सकते हैं? (हाँ या नहीं)

ग. क्या हम उन्हें **प्रोत्साहित** कर सकते यहीं कि वे परमेश्वर पर अपने विश्वास में सच्चे बने रहें। (हाँ या नहीं)

15. आपके पास एक गवाही है। मसीहियों को अपनी **गवाही** में तीन बातें शामिल करनी चाहिए:

- मसीही बनने से पहले मैं क्या था।
- मैं मसीही कैसे बना।
- मेरे लिए यीशु का क्या महत्व है।
- यीशु मेरा मित्र कैसे है।

क. क्या आप एक संक्षिप्त **गवाही** लिख सकते हैं जिसे आप किसी मित्र को बताया सकते हैं?

ख. क्या आप कुछ ऐसे लोगों को जानते हैं जो मसीही नहीं हैं? (हाँ या नहीं)

ग. क्या आप उनमें से तीन के नाम लिख सकते हैं?

वे आपके परिवार के सदस्य या मित्र हो सकते हैं। वे आपके पड़ोसी या सहकर्मी हो सकते हैं।

घ. क्या आप उन लोगों के लिए प्रार्थना करेंगे? (हाँ या नहीं)

ङ क्या आप उन्हें गवाही देंगे? उन्हें अपनी **गवाही** दें? उन्हें **प्रोत्साहित** करें? उनके मित्र बनें? (हाँ या नहीं)

आपने यह अध्ययन कर लिया है कि सभी मसीहियों को गवाही देनी चाहिए। परन्तु, हो सकता है कि आपको **गवाही** देने से डर लगे। जब आप डरे हुए होंगे तो कौन आपकी सहायता करेगा? आपको बोलने की सामर्थ्य कौन देगा? अगला अध्ययन आपके इन प्रश्नों का उत्तर देगा।

शब्द सूची

1. **बपतिस्मा** *(संज्ञा):* एक नए मसीही के लिए पानी का उपयोग करते हुए किया जाने वाला विशेष कार्य या संस्कार; (**बपतिस्मा** दिखाता है कि व्यक्ति यीशु पर उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करता है। **बपतिस्मे** में, व्यक्ति पानी में डुबकी लगाने का चुनाव कर सकते हैं। या वे अपने ऊपर पानी डालने या छिड़कने का चुनाव कर सकते हैं।)

2. **बपतिस्मा देना** *(क्रिया):* एक विशेष कार्य या संस्कार में नए मसीहियों के साथ पानी का उपयोग करें; (देखें **बपतिस्मा**।)

3. **फल उत्पन्न करना** *(क्रिया वाक्यांश):* यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में जानने और ग्रहण करने में अन्य लोगों की सहायता करें; यीशु में विश्वासियों को पैदा करना या बनाना।

4. **प्रोत्साहित करें** *(क्रिया):* किसी को आत्मा में बेहतर महसूस कराने के लिए शब्दों या कार्यों का उपयोग करें; किसी को आशा दें; सहायता करें और मार्गदर्शन करें।

5. **मनुष्यों के पकड़ने वाले** *(संज्ञा वाक्यांश):* वे मसीही जो यीशु मसीह की गवाही देते हैं; ऐसे लोग जो यीशु के बारे में जानने में दूसरों की सहायता करते हैं।

6. **लोगों को पकड़ना** *(क्रिया वाक्यांश):* यीशु मसीह की **गवाही** दें; दूसरों की यीशु के बारे में जानने में सहायता करें।

7. **मसीहा** *(व्यक्तिवाचक संज्ञा):* यीशु मसीह; वह जन जिसे परमेश्वर ने पृथ्वी पर उद्धारकर्ता होने के लिए भेजा।

8. **आराधनालय** *(संज्ञा):* कलीसिया या यहूदियों का आराधना स्थल।

9. **गवाही** *(संज्ञा):* वे शब्द जो बताते हैं कि यीशु एक व्यक्ति के लिए क्या महत्व रखता है; (अक्सर, एक व्यक्ति कलीसिया में **गवाही** देता है।)

10. **गवाही देना** *(क्रिया):* बताएं कि यीशु ने आपके लिए क्या किया है; यीशु के उद्धारकर्ता होने की **गवाही** देना।

11. **गवाह** *(संज्ञा):* ऐसा व्यक्ति जो बताता है कि यीशु ने उसके लिए क्या किया है।

पाठ 7
मसीहियों को पवित्र आत्मा से भरना चाहिए

स्मृति आयत:

"आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ" (इफिसियों 5:18)

एक मसीही कह सकता है: "मैं परमेश्वर के लिए और अधिक करना चाहता हूँ। परन्तु, मैं निर्बल हूँ। मुझे और अधिक सामर्थ्य की आवश्यकता है। फिर, मैं परमेश्वर के लिए और अधिक कर सकता हूँ।" इस आवश्यकता का केवल एक ही उत्तर है। मसीही को **पवित्र आत्मा** से भरे हुए होना चाहिए। प्रेरित पौलुस ने कहा, "आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।" (इफिसियों 5:18)

1. यीशु मसीह ने अपने शिष्यों को सिखाया। उसने उन्हें **पवित्र आत्मा** के बारे में बताया। यूहन्ना ने यीशु की शिक्षाओं में से कुछ बातें लिखीं। यूहन्ना 7:38-39 को पढ़ें। यीशु के कहे अनुसार के मसीही को क्या मिलता है?

पवित्र आत्मा एक मसीही के जीवन में आता है।

2. यूहन्ना 14:26 को पढ़ें। हमें कौन सिखाएगा?

पवित्र आत्मा एक **सहायक** है। **सहायक** एक ऐसा व्यक्ति होता है जो हमारी सुनता है। वह सहायता करने वाले के समान होता है। वह हमारी परेशानियों में हमारी सहायता करता है। **पवित्र आत्मा** परमेश्वर का **सहायक** है।

3. यूहन्ना 15:26 को पढ़ें।

4. वह किसके बारे में बात करता है?

यूहन्ना 3:3-5 को पढ़ें। **पवित्र आत्मा** लोगों के मनों में कार्य करता है। वह हमारे **नया जन्म** पाने के बाद हमारे साथ कार्य करता है। और, वह हमारे साथ तब कार्य करता है जब हम पानी और आत्मा से जन्म लेते हैं।

5. प्रेरितों के काम 1:8 को पढ़ें। पवित्र आत्मा ने शिष्यों को क्या करने की सामर्थ्य दी?

6. प्रेरितों के काम 9:17 को पढ़ें। शाऊल [प्रेरित पौलुस] ने यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया। फिर, किसने शाऊल को "पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने" के लिए कहा?

7. 1 कुरिन्थियों 3:1 और 3:3 को पढ़ें। कुरिन्थुस की कलीसिया के मसीहियों की बहुत सी परेशानियाँ थीं। उन परेशानियों ने उन्हें **पवित्र आत्मा** से परिपूर्ण होने से रोके रखा। वे दूसरे लोगों के प्रति दयालु नहीं थे। वे एक दूसरे के साथ शब्दों से लड़ते थे। वे एक दूसरे के बारे में गलत व्यवहार रखते थे। इस बात ने उनके विषय में क्या दिखाया?

8. 1 पतरस 1:2 को पढ़ें। **पवित्र आत्मा** मसीहियों में विशेष ढंग से कार्य करता है। **पवित्र आत्मा** उन चीजों को दूर कर देता है जो हमें पवित्र या शुद्ध होने से रोकती हैं। पतरस इस विशेष कार्य को "**आत्मा** का **पवित्र करने** का कार्य" कहता है। यीशु मसीह ने इसे कैसे सम्भव बनाया?

9. यूहन्ना 17:17 को पढ़ें।

   क. यीशु ने अपने शिष्यों के लिए क्या प्रार्थना की?

यीशु ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उन्हें सत्य के द्वारा **पवित्र** करे।

   ख. क्या यीशु ने आपके लिए यह प्रार्थना की है? यदि हाँ, तो उस प्रार्थना को लिखें परन्तु उसमें अपना नाम जोड़ दें।

10. प्रेरितों के काम 15:8-9 को पढ़ें। शब्द **शुद्ध** का अर्थ पाप से शुद्ध होना है। परमेश्वर ने शुरुआती मसीहियों को **पवित्र आत्मा** दिया। **पवित्र आत्मा** ने उनके मनों को किसके द्वारा शुद्ध किया?

11. 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 को पढ़ें। यह सब मसीहियों के लिए एक प्रार्थना है। पौलुस प्रार्थना करता है कि परमेश्वर सभी मसीहियों को पूरी रीति से **पवित्र** करे। इसका अर्थ है कि परमेश्वर हमें पूरी तरह से **पवित्र** करेगा या पूरे तौर पर **पवित्र** करेगा। कौन हमारे मनों और जीवनों को शुद्ध करेगा?

12. पौलुस ने कहा, "इसलिए हमें अपने आप को शुद्ध करना चाहिए – अर्थात हमें अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करना चाहिए। हमें अपने आचरण में पवित्र बनने का प्रयास

करना चाहिए।" (2 कुरिन्थियों 7:1) निम्नलिखित वाक्यों में से कौन सा वाक्य इस आयत से मेल *नहीं* खाता? (क, ख, ग, या घ)

क. हमें वे चीजें करनी बंद कर देनी चाहिए जो हमारे शरीरों को नुकसान पहुंचाती हैं।

ख. हम इस जीवन में कभी शुद्ध नहीं हो सकते हैं।

ख. हमें यीशु मसीह के समान जीने का प्रयास करना चाहिए। हमें जितना हो सके उतना अधिक पवित्र बनना चाहिए।

घ. हमें अशुद्ध कामों, विचारों, और व्यवहारों से दूर हो जाना चाहिए।

13. रोमियों 8:2 को पढ़ें। जीवन की आत्मा की व्यवस्था हमें स्वतंत्र करती है। हम किस चीज से स्वतंत्र होते हैं?

14. 1 कुरिन्थियों 13:13 को पढ़ें। मसीहियों को विश्वास, आशा, और प्रेम प्रकट करना चाहिए। इन तीनों में सबसे बड़ा कौन है?

15. रोमियों 5:5 को पढ़ें। परमेश्वर का प्रेम हमारे पास कैसे आया है?

16. रोमियों 8:4 को पढ़ें। **पवित्र** मसीही **पवित्र आत्मा** से परिपूर्ण होते हैं। अब, वे **पापी स्वभाव** के पीछे नहीं चलते। इसके बजाय, वे किसके पीछे चलते हैं?

फिर, **पापी स्वभाव** उनके जीने के तरीके पर प्रभुता नहीं करता। वे उनके मन **शुद्ध** हो चुके हैं। **पवित्र आत्मा** उन्हें जीने का नया मार्ग प्रदान करता है। वह उन्हें परमेश्वर की आज्ञा मानने की सामर्थ्य प्रदान करता है।

पवित्र आत्मा मसीहियों के भीतर विभिन्न प्रकार से कार्य करता है। वह उनके पापमय जीवन को शुद्ध करता है। वह उनके मन के **पापी स्वभाव** को शुद्ध करता है। वह उन्हें पवित्र जीवन जीने की सामर्थ्य प्रदान करता है। वह परमेश्वर की गवाही देने में उनकी सहायता करता है। परन्तु पहले, मसीहियों को कुछ करना चाहिए। उन्हें **पवित्र आत्मा** से अपने जीवन को भरने के लिए कहना चाहिए। उन्हें अपने आप को पूरी तरह से परमेश्वर को दे देना चाहिए।

17. आप और पवित्र आत्मा।

क) क्या आपने पवित्र आत्मा की भरपूरी की विनती की है? (हाँ या नहीं)

ख) क्या पवित्र आत्मा आपके जीवनों को भरने के लिए आ गया है? (हाँ या नहीं)

ग) यदि नहीं, तो क्या आप इसके बारे में सोच रहे हैं? (हाँ या नहीं)

18. क्या आप चाहेंगे कि **पवित्र आत्मा** आपके जीवन को भरे? यदि हाँ, तो यहाँ चार चीजें दी गई हैं जो आपको करनी चाहिए।

- परमेश्वर से आपको **पवित्र आत्मा** भरने की विनती करें। (लूका 11:13)
- अपना सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर को दें। (रोमियों 12:1-2)
- परमेश्वर से कहें कि आपको भीतर से शुद्ध और पवित्र होने की आवश्यकता है। (प्रेरितों के काम 15:8-9)
- विश्वास के कार्य के द्वारा **पवित्र आत्मा** को ग्रहण करें। परमेश्वर पर आपको **पवित्र** करने के लिए भरोसा करें। उसने जो प्रतिज्ञा की है, उसे पूरा करने के लिए उस पर भरोसा करें। (1 थिस्सलुनीकियों 5:23-24)

शब्द सूची

1. **नया जन्म पाया हुआ** *(विशेषण वाक्यांश):* यह दिखाता है कि एक मसीही या विश्वासी; ऐसा व्यक्ति जो पाप बच गया है,

2. **सहायक** *(संज्ञा):* ऐसा व्यक्ति जो लोगों की बात सुनता है और उनकी परेशानियों में उनकी सहायता करता है; **सहायक** *(व्यक्तिवाचक संज्ञा):* **पवित्र आत्मा;** परमेश्वर का **आत्मा; (पवित्र आत्मा** हमारे **सहायक** के रूप में हमारी परेशानियों में हमारी सहायता करता है। वह सभी मसीहियों का विशेष सहायक है।)

3. **पवित्र आत्मा, परमेश्वर का आत्मा; आत्मा** *(व्यक्तिवाचक संज्ञा):* त्रिएक परमेश्वर का तीसरा जन; **सहायक;** मददगार; (परमेश्वर तीन व्यक्तित्व वाला परमेश्वर है; पिता, पुत्र, और प**वित्र आत्मा। पवित्र आत्मा** संसार में यीशु मसीह का कार्य करता है। **पवित्र आत्मा हमें** प्रोत्साहित करता है और परमेश्वर को जानने में हमारी सहायता करता है।)

4. **शुद्ध** *(क्रिया):* पाप से शुद्ध और पवित्र किया जाना; मन में कोई पाप न होना; (हमारे हृदय और जीवन **पवित्र आत्मा** के द्वारा **शुद्ध** किए जाते हैं।)

5. **पवित्र; पवित्र करना** *(क्रिया):* शुद्ध या पवित्र बनाना; धार्मिक कारण से अलग करना; पाप से अलग करना और परमेश्वर को देना।

6. **पापी स्वभाव** *(संज्ञा वाक्यांश):* एक व्यक्ति का आंतरिक भाग जो उसे पाप करने और परमेश्वर की आज्ञा न मानने के लिए प्रेरित करता है।

पाठ 8
मसीही परमेश्वर के परिवार में जुड़ जाते हैं

स्मृति आयत

> "एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों–त्यों और भी अधिक यह किया करो" (इब्रानियों 10:25)।

सभी मसीही परमेश्वर के परिवार का हिस्सा हैं। परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है। मसीही परमेश्वर के परिवार में भाई और बहन हैं। इस परिवार को **कलीसिया** कहा जाता है। निश्चित रूप से अपने नए परिवार को ढेर सारा प्रेम दिखाएं।

1. बाइबल उन लोगों के बारे में बात करती है जो यीशु मसीह के पीछे चलते हैं। प्रेरितों के काम 11:26 को पढ़ें। यीशु पर विश्वास करने वाले लोग क्या हैं?

2. 1 कुरिन्थियों 12:27 को पढ़ें। कलीसिया को क्या कहा जाता है?

देह के भाग एक साथ कार्य करते हैं। **कलीसिया** को मसीह की देह के रूप साथ मिलकर कार्य करना चाहिए।

3. इफिसियों 5:23 को पढ़ें। **कलीसिया** का सिर कौन है?

"सिर" का अर्थ है अगुवा।

4. इफिसियों 5:25 को पढ़ें। **कलीसिया** यीशु मसीह के लिए महत्वपूर्ण थी। यीशु मसीह क्रूस पर क्यों मरा?

5. इफिसियों 5:24 कहता है कि **कलीसिया** मसीह के **अधीन** है। **अधीन** होने का अर्थ आज्ञा मानने से है। उसकी **कलीसिया** का भाग बनने के लिए, मुझे किसकी आज्ञा माननी चाहिए?

6. 1 कुरिन्थियों 4:17 को पढ़ें। पौलुस ने मसीह के बारे में कहाँ सिखाया?

7. यूहन्ना की पुस्तक में **कलीसिया** के विषय में कुछ सच्चाइयाँ बताई गई हैं। यूहन्ना 13:35 को पढ़ें। लोग कैसे जानेंगे कि आप **कलीसिया** में हैं?

8. यूहन्ना 21:16 को पढ़ें। एक **पास्टर** को अपने भेड़ों के लिए क्या करना चाहिए?

> कई बार, हम **पास्टर** को भेड़ों का चरवाहा कहते हैं। इसका अर्थ है कि **पास्टर कलीसिया** का अगुवा है।

9. मसीही लोग यीशु मसीह को विशेष तरीके से याद रखते हैं। 1 कुरिन्थियों 11:23-26 को पढ़ें। ये आयतें **प्रभु भोज** के विषय में हैं। **प्रभु भोज** उन सभी लोगों के लिए जो मसीही हैं। उन सभी ने **उद्धार** के लिए यीशु पर विश्वास किया है। हमें **प्रभु भोज** के विषय में निम्नलिखित में से कौन सी बात याद रखनी चाहिए? (क, ख, ग, या घ)

   क) हम यीशु के दुःख उठाने और मृत्यु को स्मरण करते हैं।

   ख) हम याद करते हैं कि यीशु हम सब के लिए मरा।

   ग) हम याद करते हैं कि यीशु फिर से धरती पर आने वाला है।

   घ) हमें ये सारी बातें याद रखनी चाहिए (क, ख और ग सभी बातें याद रखी जानी चाहिए)

10. गलातियों 6:2 को पढ़ें। मैं अपनी **कलीसिया** में दूसरे लोगों की सहायता कैसे कर सकता हूँ?

11. 1 कुरिन्थियों 12:4 और 7 को पढ़ें। कौन लोगों को विशेष वरदान देता है? तब, कलीसिया के सभी लोग सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

12. कुछ **कलीसियाएं** मजबूत और प्रेम करने वाली होती हैं। कुछ **कलीसियाएं** ऐसी नहीं होतीं। आप निम्नलिखित में से कौन सी **कलीसियाओं** से जुड़ना चाहेंगे? (क या ख)

   क) यरूशलेम की **कलीसिया।** (प्रेरितों के काम 4:32-33)

   ख) लौदीकिया की **कलीसिया।** (प्रकाशितवाक्य 3:14-17)।

13. प्रेरितों के काम 2:42 को पढ़ें। शुरुआती मसीहियों ने प्रेरितों से क्या सीखने में समय बिताया?

वे एक दूसरे के साथ भी **संगति** रखते थे। वे साथ मिलकर **रोटी तोड़ते** थे।

14. इब्रानियों 10:25 का क्या अर्थ है? यह आयत हमने क्या करने के लिए कहती है?

हमने आपस में मिलने से दूर नहीं रहना चाहिए। हमें एक दूसरे को प्रोत्साहित करना चाहिए।

15. क्या आपको लगता है कि आपको एक **कलीसिया** से जुड़ना चाहिए? (हाँ या नहीं) यदि हाँ, तो क्यों?

16. आपने **उद्धार** के लिए परमेश्वर पर विश्वास किया है। आप अब परमेश्वर के परिवार में है। आप यीशु मसीह के साथ **एकजुट** हैं या उससे जुड़ चुके हैं। आप यीशु मसीह में अन्य मसीहियों के साथ **एकजुट** हैं। आपको एक **कलीसिया** में जुड़ने के बारे में सोचना चाहिए। आपकी **कलीसिया** आपके नए विश्वास में बढ़ने में आपकी सहायता कर सकती है। आपका **पास्टर** भी बढ़ने में आपकी सहायता कर सकता है। निम्नलिखित बातों में से कौन सी बात आपके विषय में सच है? (क, ख, या ग)

क) मैं एक कलीसिया में जुड़ गया हूँ।

ख) मैं अभी किसी कलीसिया से नहीं जुड़ा हूँ।

ग) मैं कलीसिया में जुड़ने की सोच रहा हूँ।

अब आपने इन बाइबल अध्ययनों को समाप्त कर लिया है। आप जैसे-जैसे परमेश्वर के साथ चलेंगे तो भविष्य में आपके दिन अच्छे हों जाएंगे! याद रखें: • परमेश्वर पर भरोसा करें और उसके लिए जियें। • उसका वचन पढ़ें और उससे सीखें। • प्रार्थना में उससे बातें करें। यह आपका सौभाग्य है। • परमेश्वर की सेवा करें। अपने आपको उसके साथ और दूसरों के साथ साझा करें।

- परमेश्वर ने यीशु में आपके लिए जो किया है उसके बारे में गवाही दें।
- अपना सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर को दें। फिर, पवित्र आत्मा से आपके जीवन को भरने के लिए कहें।
- **कलीसिया** और **विश्वासियों** की संगति में जुड़ें।

शब्द सूची

1. **रोटी तोड़ी** *(क्रिया वाक्यांश):* भोजन किया; इसका अर्थ **प्रभु भोज** भी है।

2. **कलीसिया** *(व्यक्तिवाचक संज्ञा):* यीशु मसीह में सभी विश्वासी; सारे मसीही; वे सभी लोग जो पाप से बच गए हैं; वे सभी लोग जिन्होंने उद्धार के लिए परमेश्वर पर भरोसा किया है।

3. **कलीसिया** *(संज्ञा):* एक इमारत या स्थान जहाँ मसीही लोग आराधना के लिए मिलते हैं; मसीही विश्वासियों की **संगति।**

4. **संगति** *(संज्ञा):* लोगों का मित्र बनना और एक दूसरे के साथ साझा करना; **कलीसिया** के भीतर का वह जीवन जो मसीही लोग यीशु मसीह में साझा करते हैं।

5. **प्रभु भोज** *(व्यक्तिवाचक संज्ञासूचक वाक्यांश):* वह विशेष तरीका जिससे मसीही लोग यीशु की मृत्यु को याद करते हैं; (मसीही जब वे एक साथ मिलते हैं तो कुछ समयों पर प्रभु भोज में हिस्सा लेते हैं। **प्रभु भोज** को भोज भी कहा जाता है।)

6. **पास्टर** *(संज्ञा):* **कलीसिया** या **विश्वासियों** की संगति का अगुवा; (**पास्टर कलीसिया** में परमेश्वर की सेवा करता है। वह परमेश्वर के वचन का प्रचार करता है। वह मसीहियों की उनके विश्वास में बढ़ने में सहायता करता है।)

7. **उद्धार** *(संज्ञा):* परमेश्वर का कार्य जिसके द्वारा वह लोगों को पाप से बचाता है।

8. **अधीन** *(क्रिया):* आज्ञा मानती है; दूसरे व्यक्ति की इच्छा के सामने झुकना या उसे स्वीकार करना।

9. **एकजुट** *(क्रिया):* एक साथ जुड़े हुए; **कलीसिया** में एक देह के रूप में साथ रहना।

परिशिष्ट
प्रश्नों के उत्तर

यहाँ पाठों में प्रश्नों के उत्तरों के सुझाव दिए गए हैं। आपको अन्य संभावित उत्तर कोष्ठकों में मिलेंगे। आप अन्य सही उत्तरों के बारे में भी सोच सकते हैं।

पाठ 1

1. हाँ

2. (क) यीशु (मसीह); (ख) आप (मैं, कोई भी, सभी लोग, प्रत्येक मनुष्य); (ग) उसका स्वागत करें; (घ) भीतर आएं; (ङ) व्यक्तिगत उत्तर

3. हाँ

4. (क) उनके पापों के कारण; (ख) हाँ; (ग) व्यक्तिगत उत्तर

5. मसीह (यीशु)

6. खुशी से क्षमा करो

7. (क) गलत; (ख) रुकें; (ग) खुशी से क्षमा करें (माफ करें)

8. ग (मुझे अपने आप को बचाने के लिए यीशु पर विश्वास करना चाहिए।)

9. (क) भले काम; (ख) नहीं

10. पिता (परमेश्वर, पिता परमेश्वर)

11. हाँ

12. (क) हाँ; (ख) हाँ; (ग) स्वर्ग

13. हाँ या नहीं – व्यक्तिगत उत्तर। यदि हाँ, उदाहरण के लिए: “मैंने अपने पापों से पश्चाताप कर लिया। यीशु मेरा उद्धारकर्ता है। यीशु ने मुझे बचाया है।” अन्य उत्तर भी सम्भव हैं।

पाठ 2

1. (क) हाँ; (ख) हाँ; (ग) यीशु (मसीह); (घ) हाँ; (ङ) हाँ

2. शैतान (इब्लीस)

3. परीक्षा होना

नहीं

5. शैतान से लड़ो (शैतान के विरुद्ध खड़े हो जाओ, शैतान की बात मत मानो, परमेश्वर की आज्ञा मानो)

6. परमेश्वर की व्यवस्था तोड़ना (भले काम न करना, परमेश्वर की आज्ञा न मानना)

7. हाँ

8. (क) व्यक्तिगत उत्तर। उदाहरण के लिए; “मुझे पाप नहीं करना चाहिए (पाप करने लगता है, पाप करता रहता है); (ख) नहीं

9. क (परमेश्वर परीक्षा से बचने में मेरी सहायता करेगा।)

10. इसलिए हम पाप नहीं करेंगे।

11. ग (यीशु के सामने पापों को मान लें और पश्चाताप करें)

12. हाँ

13. हाँ

14. भेड़ें (मसीही; विश्वासी)

पाठ 3

1. हाँ

2. हाँ

3. सभी उत्तर “हाँ” हैं

4. (क) मानें (आज्ञा मानें); (ख) हाँ; (ग) सुनें (ग्रहण करें; विश्वास करें; आज्ञा मानें; उसे करें); (घ) हाँ; (ङ) आज्ञा मानें (थामे रहें, उसमें बने रहें); (च) हाँ; (ज) परमेश्वर की आज्ञा मानें; (झ) हाँ

5. प्रेम

6. (क) हाँ; (ख) जीवन

7. (क) तलवार; (ख) वचन (शिक्षा)

8. (क) उसने पवित्रशास्त्र का हवाला दिया; (ख) वे हमें बताते हैं कि परमेश्वर क्या चाहता है

9. (क) यह हमें परमेश्वर की आज्ञाओं बताती है; (ख) परमेश्वर की आज्ञाएं याद रखने के लिए

10. सभी व्यक्तिगत उत्तर

11. व्यक्तिगत उत्तर

12. व्यक्तिगत उत्तर। उदाहरण के लिए: एक मसीही के रूप में बढ़ना, परमेश्वर की इच्छा को जानना, वर्तमान में सहायता प्राप्त करना (अन्य उत्तर सम्भव हैं)

पाठ 4

1. सुबह (दिन)

2. हमेशा

3. धन्यवाद दें

4. (क) पाप (अधर्म; बुराई); (ख) नहीं

5. (क) हाँ; (ख) परमेश्वर की इच्छा से सहमत होना (परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होना)

6. (क) प्रार्थना; (ख) हाँ; (ग) पिता; (घ) बने रहना (टिके रहना)

7. विश्वास करना

8. व्यक्तिगत उत्तर

9. देखें और प्रार्थना करें

10. ग (उसे बताएं कि हम अपने मनों में क्या महसूस करते हैं।)

11. व्यक्तिगत उत्तर

12. व्यक्तिगत उत्तर

पाठ 5

1. (क) अपने सारे मन, प्राण और बुद्धि के साथ (ख) अपने समान (मैं)

2. दोनों बातों में परमेश्वर की आज्ञाओं का (पूरा करने, पालन करने, करने) पालन करने की आवश्यकता पड़ती है

3. (क) मरना; (ख) मैं अनन्त (सच्चा, नया) जीवन ग्रहण करता हूँ; आदर

4. परमेश्वर का

5. कुछ भी; हर चीज

6. (क) और अधिक चोरी न करें; (ख) अच्छे कर्मचारी बनें, (घ) निर्धन और जरूरतमन्द लोगों से साझा करें

7. प्रेम, दया

8. अविश्वासी (वे लोग जो यीशु पर विश्वास नहीं करते)

9. (क) पवित्र आत्मा; (ख) मैं अब परमेश्वर का हूँ

10. भाई (बहनें, अन्य)

11. संसार

12. यीशु ने बड़ा दाम (देकर मुझे मोल लिया) चुकाया।

13. (क) परमेश्वर का राज्य; (ख) उसकी धार्मिकता (परमेश्वर क्या चाहता है)

14. अनन्त जीवन (सदा का जीवन)

15. व्यक्तिगत उत्तर

पाठ 6

1. यीशु ने उसके लिए जो किया था वह सब

2. (ग) वे बातें जिन्हें आप स्वयं देखते और सुनते हैं

3. (क) पतरस; (ख) अन्द्रियास

4. व्यक्तिगत प्रत्युत्तर

5. (क) फल; (ख) जब हम गवाही (साक्षी) देते हैं

6. सभी उत्तर व्यक्तिगत हैं

7. संसार के सभी लोग (अन्य लोग)

8. (क) जब उन्होंने विश्वास किया; (ख) व्यक्तिगत उत्तर; (ग) व्यक्तिगत उत्तर

9. मनुष्यों के पकड़ने वाले

10. उत्तर (मेरी गवाही)

11. पौलुस

12. (क) क्योंकि यीशु मार्ग, सत्य और जीवन है; (ख) यीशु ही वह जन है जो हमारा मार्गदर्शन पिता की ओर करता है

13. ङ (हमें ये सभी बातें बतानी चाहिए)

14. (क) व्यक्तिगत उत्तर; (ख) हाँ; (ग) (हाँ)

15. व्यक्तिगत उत्तर

16. व्यक्तिगत प्रत्युत्तर

पाठ 7

1. (पवित्र) आत्मा

2. (पवित्र) आत्मा (सहायक, मददगार, शान्ति देने वाला)

3. हाँ

4. यीशु मसीही

5. गवाह (गवाह बनो)

6. हनन्याह

7. वे सांसारिक थे (सांसारिक; संसार के लोगों के समान)

8. यीशु मसीह के लहू (मृत्यु) के द्वारा

9. (क) उन्हें पवित्र (समर्पित) करने के लिए; (ख) व्यक्तिगत उत्तर

10. विश्वास (यीशु पर उनका भरोसा)

11. परमेश्वर

12. ख (हम इस जीवन में कभी शुद्ध नहीं हो सकते।)

13. पाप (की व्यवस्था)

14. प्रेम

15. पवित्र आत्मा

16. आत्मा (पवित्र आत्मा)

17. व्यक्तिगत उत्तर

18. व्यक्तिगत उत्तर

पाठ 8

1. कलीसिया (लोग); विश्वासी (शिष्य, अनुयायी); मसीही

2. (मसीह की) देह

3. मसीह (यीशु)

4. हमारा उद्धारकर्ता होने के लिए

5. यीशु (परमेश्वर)

6. कलीसियाएं

7. प्रेम (एक दूसरे के लिए)

8. देखभाल करना (अगुवाई)

9. घ (हमें इन तीनों बातों को याद रखना चाहिए)।

10. उनके बोझ उठाने में सहायता करें (उनकी परेशानियों में)

11. (पवित्र) आत्मा

12. क (यरूशलेम की कलीसिया सबसे अच्छा विकल्प है।)

13. शिक्षा (सिद्धांत)

14. एक दूसरे को एक साथ मिलने के लिए प्रोत्साहित करें

15. (व्यक्तिगत प्रत्युत्तर – परन्तु कुछ अच्छे उत्तर हो सकते हैं: परमेश्वर की आराधना करना; मेरे अन्य विश्वासियों से मिलने पर दृढ़ बनना; अन्य मसीहियों द्वारा सहायता किया जाना; परमेश्वर बारे में और अधिक जानना)

16. व्यक्तिगत उत्तर